International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

मीरा के काव्य में नारी मुक्ति

Malige Parvathi

Lecturer in Hindi, Silver Jubilee Government College, Kurnool, Andhra Pradesh

मीरा का काव्य उन विरल उदाहरणों में हैं जहाँ रचनाकार का जीवन और काव्य एक - दूसरे में घुल मिल गए हैं, परस्पर के संपर्क से वे एक -दूसरे को समृद्ध करते है | भारतीय और पाश्च्यात्य नारी विमर्श का फलक कितना व्यापक एवं विविध है | जहाँ पाश्च्यात्य नारी विमर्श बहुत ही संगठित एवं सशक्त दिखलाई पड़ता है वहीं भारतीय नारी विमर्श भारतीय परिवेश एवं संस्कृति में बहुत ही जटिल तथा असंगठित दिखलाई पड़ता है | इसका मूल कारण यह है कि भारत विविध धर्मो, भाषाओं जतियों का विकासशील देश है | इसमें प्रत्येक धर्म, जाति एवं वर्ग की स्त्रियॉ की अलग-अलग गंभीर समस्याएँ हैं | इनके विरुद्ध कुछ हद तक इन विभिन्न धर्मों, जतियों एवं वर्गों की उच्च शिक्षित महिलाएँ अपने-अपने स्तरों पर खड़ी होती है |

स्त्री विषयक ग्रन्थों में धारणाएँ इस प्रकार है - "ऐतरेय ब्राहमण में कन्या के जन्म को अभिशाप कहा गया है | अत: पुत्र की प्राप्ति के लिए गर्भवती स्त्री के लिए पुंसवन नामक अनुष्ठान करवाना आवश्यक था |"1 मैत्रायनि संहिता में "स्त्री को मिथ्या चारिणी, दुर्भाग्य स्वरूपिणी, मदिरा धृतक्रीड़ा की तरह व्यसन मात्र कहा गया | सर्वश्रेष्ठ सम्पन्न श्रेष्ठ नारी को भी अधम पुरुष से हींन माना गया है |"2 शठपथ ब्राहमण में हिदायत है कि "स्त्री, शूद्र और काले पक्षी को मत देखो अन्यथा श्री पाप , प्रकाश और अंधकार, सत्या और मिथ्या एकाकार हो जाएंगे |"3 ऋग्वेद में पति अपनी पत्नी से कहता है कि "देवताओं ने तुमको मुझे इसलिए दिया है कि इससे गृहपति के कर्तव्यों का सम्पादन हो |"4 अथर्ववेद में भी इसी विचार को दोहराया गया है | ऋग्वेद काल से ही पतिव्रता होना पत्नी के लिए आवश्यक था परंतु पति पर ऐसा कोई धार्मिक नियंत्रण नहीं था |"5 बहू पत्नी प्रथा का प्रचलन आम था | सती प्रथा की उत्पत्ति भी पतिव्रत्य परंपरा का ही परिणाम थी | ऋग्वेद में सती प्रथा का उल्लेख नहीं है जब कि अथर्ववेद में इसके संकेत मिलते हैं | " गृहणी के रूप में स्त्री के कर्तव्य भी निम्नलिखित रूप में परिभाषित किए गए हैं - बड़े-बूढ़ों की सेवा करना , सवतों (सौत) के साथ प्यारी सखी की तरह व्यवहार करना, पति के रूखे व्यवहार पर भी क्रोध नहीं करना, आश्रितों के साथ अनुग्रह पूर्वक व्यवहार करना , संयुक्त परिवार के भरण पोषण की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ -साथ गृहिणी उत्पादन में भी पुरुष का हाथ बटाती थी , ऋग्वेद काल से ही स्त्री के सूत कातने तथा वस्त्र बनाने के

कुटीर उद्योगों में भागीदारी के साक्ष मिले हैं, विधवाएँ सूत कातकर ही अपनी रोजी रोटी कमाती थी | स्त्री को स्वतंत्र रूप से संपत्ति का अधिकार नहीं था |"6

मीरा भक्तिकाल की सशक्त कवयित्रि तथा साथ -साथ भक्त भी रही है | मध्यकाल में स्त्रियाॅ की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन मीरा तो राजकुल की वधू थी और उसपर भी विधवा थी | मीरा के लिए भक्ति में लीन हो जाना कोई आसान काम नहीं था | सभी के साथ घर से, राजदरबार से समाज से लड़कर एक अच्छी महान भक्त की श्रेणी में पहुँच गई | मीरा की कविता मीरा की ही नहीं है बल्कि उस समय के नारियों की पीड़ा, दुख वेदना घुटन और तड़प का प्रतिनिधित्व करती है | बहरहाल उन नारियों के दुख दर्द पीड़ा को लेकर मीरा सामने आई और एक बार उसने घर की चार दीवारों को लांघकर निकल गई तो फिर लौटकर नहीं आई | संतन कहाँ सीकरी सो काम कुंभनदास की पंक्ति मीरा के जीवन पर खरी उतरती है | "पति की मृत्यु के बाद सती -प्रथा से मना करके घर ग्रहस्थी की तथाकथित मर्यादा तोड़कर भक्ति मार्ग में एकदम स्वाधीन स्वतंत्र चेता स्त्री के रूप में आगे बढ़ना सामंती पुरुष प्रधान समाज में कोई सामान्य बात नहीं है | सामाजिक बंधनों की परवाह किए बिना तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश की चुनौति को ललकारने वाली स्त्री के रूप में मीरा अपने युग में अकेली खड़ी है - "भक्ति में ईश्वर पुरुष है और सभी जीवात्माएँ स्त्रियाँ हैं | इसे दार्शनिक स्तर पर स्वीकार करने वाले जीव-गोस्वामी व्यावहारिक भेद बनाए हुए थे | मीरा ने इस भेद-बुद्धि पर प्रहार किया था |"

मध्ययुगीन समाज में स्त्री की भूमिकाएँ आज की स्त्री से भिन्न थी | उसके लिए उड़ान भरने के लिए अनंत आकाश नहीं था | तत्कालीन समाज में किसी स्त्री की भक्ति भी सहज और सरल नहीं थी क्योंकि स्त्री को भक्त रूप में स्वीकार करने के लिए व्यापक समाज कौन कहें , साधू समाज भी तैयार न था | चौरासी वैष्णव की वार्ता में वल्लभ संप्रदाय के भक्तों का गुण-गान किया गया है लेकिन उसमें मीराबाई को बहुत बुरा भला कहा गया है और गलियाँ भी दी गई है | मीरा का रास्ता काँटों से भरा हुआ था जहाँ मीरा ही नहीं उस समय के सभी नारियों के लिए उस रास्ते पर चलना कठीण था | वे कहती हैं -

माई सवारे रंग राची |
साज सिंगार बांध पग घुंघुरू लोकलाज तज नाची |

उस समय एक नारी के लिए ऐसा संघर्ष अत्यंत कठीण था | लेकिन मीरा ने अपने स्वत्व की रक्षा के लिए कठीण संघर्ष किया | वह राठौर राज की कन्या और सीसोदिया कुल की वधू थी जहाँ सती प्रथा का चलन आम था | उन्होंने निर्भय होकर लोकभय का सामना करते हुए कहा -

भजन करस्या सती न होस्या मन मोह्यो घान नामी |

नारी के बारे में मीरा का दृष्टिकोण बाकी भक्त कवियों से सर्वात : भिन्न था | उनकी कविता में एक ओर सामंती समाज में नारी की पराधीनता और यातना का बोध है तो दूसरी ओर उस व्यवस्था के बंधनों का पूरी तरह निषेध और मीरा का संघर्ष भी है | अत: मीरा का जीवन और काव्य उस काल के अन्य भक्त कवियों की नारी संबंधी मान्यताओं का प्रतीकार और प्रत्युत्तर भी है |

स्त्री चेतना व मुक्ति के लिए मीराबाई के संघर्ष और उनके जीवन में आए हुए विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए कृष्ण भक्ति मार्ग पर चलने का रास्ता उनका बहुत ही कठिन रास्ता था | मीरा का व्यक्तित्व अपने समाय का सबसे क्रांतिकारी नारी व्यक्तित्व था | मीराबाई सम्पूर्ण नारी चेतना और नारी मुक्ति की बात करती है | राणा द्वारा विष का प्याला भेजे जाने पर वह कहती है कि

राणा जी मोहे बदनामी लागे मीठी |
कोई नींदों, कोई विंदों, मैं चलूँगी चाल अनूठी ||

सदियों की सामंती परिवेश और सामंती मनसिकता के तहत नारी जिसे अपने हृदय में सँजोये गीली लकड़ी की तरह सुलगती रही है मीरा ने उसे व्यक्त कर वाणी दी और उसके माध्यम से पुरुष वर्चस्व वाले समाज में नारी के प्रति बरती जाने वाली उस अमानवीयता को उजागर किया , नारी जीवन के साथ एक सनातन नियति के रूप में , जो नाना धर्म शास्त्रों के आधार पर गढ़ दी गई है | प्रेम और भक्ति के गहरे और गंभीर उद्‌गारों के बीच मीरा के रचनाओं में नारी की इस अंतर्व्यथा को सुनना कठीण नहीं है | किन्तु मीरा नारी मन की व्यथा के साथ -साथ नारी - मन की मुक्तिगामी आकांक्षा को, उसमें पल रहे विरोध और विद्रोह भाव को भी मुक्त करती है और इसके साक्ष्य के रूप में हमारे सामने आती है |

कबीर जायसी तथा तुलसी का विचार जहाँ नारी विरोधी है वहीं सूरदास के काव्य में नारी का सहज , स्वतन्त्रता और तेजस्वी रूप मिलता है जो प्रेम में लोक -वेद के बंधन को नहीं मानती | ऐसे समय में जब भक्तिकाल के लगभग सभी संत (कुछ को छोड़कर) नारी विरोधी समाज की परिकल्पना का पक्ष पोषक बने हुए थे , उस समय मीरा बाई जैसी स्त्री संत ने नारी चेतना व नारी मुक्ति का बिगुल बजाकर समाज में क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय दिया | मेरबाई के संबंध में मैनेजर पाण्डेय का उद्‌गार इस प्रकार है - “मीरा की कविता मे सामंती समाज और संस्कृति की जकड़न से बेचैन स्वर को मुखर अभिव्यक्ति मिली है | उनकी स्वतन्त्रता की आकांक्षा जितनी आध्यात्मिक है उतनी ही सामाजिक भी |”

शिव कुमार मिश्र कहते हैं कि - " मीरा स्त्री विमर्श के पायदान पर सबसे ऊँची , हमारी समकालीन बनकर, हमारे समय में हमसे अपने सारे दर्द के साथ मुखातिब होती है जो एक स्तर पर मीरा - एक तन्मय कृष्ण-भक्त, कृष्ण के प्रति समर्पित प्रेमिका का दर्द है , दूसरे स्तर पर मीरा नामक एक समकालीन सामंती राज परिवार की औरत का भी दर्द है | मीरा स्त्री-विषय में हमारी समकालीन हमारे विद्रोह के नाते हैं जो इन्होंने अपना मनोवांछित जीवन जीने के लिए राजपरिवार के लिए अंतर्गत किया और जिसके ताने-बाने परंपरागत सामाजिक संरचना की उस भेदभाव पूर्ण बुनियाद से भी जुडते हैं जिसमें वर्ण-जाति के आधार पर सवर्ण - असवर्ण और लैंगिक आधार पर स्त्री-पुरुष के अधिकार और कर्तव्यों में उनकी सामाजिक हैसियत से भेद किया गया है | मीरा धर्मशास्त्र विहित , कुल-परंपरा-विहित, मर्यादाओं और नैतिकता के खिलाफ खड़ी हुई पीड़ित प्रताड़ित हुई अंतत: सारी आरोपित मर्यादाओं, विधि निषेधों को लात मारते हुए राजमहल से बाहर आ गई | मीरा के अपने युग संदर्भों में यह बहुत बड़ी बात है | वही मीरा को समकालीन बनाती है और मौजूदा स्त्री - विमर्श से जोड़ती है |"7

डॉ. के एम मालती के अनुसार "आज भारतीय नारी अपने अधिकारों एवं स्वायत्तता को पाने के लिए और सब तरह के शोषण से मुक्त होने के लिए संघर्षरत है |"8 भारतीय नारी-विमर्श के इस उज्ज्वल भविष्या का सर्वप्रथम सपना मीरा ने देखा और मध्यकालीन सामंती समाज में अपने स्तर पर अपार संभावनाओं के साथ एक सीमा तक साकार करने की कोशिश भी की |

शिव कुमार मिश्र कहते है कि - "मीरा का विद्रोह बहुत दूर तक उनका निजी विद्रोह है , अपने ऊपर लगाई गई पाबंदियों से बाहर आने के हेतु किया गया विद्रोह , मनोवांछित जीवन जीने के लिए किया गया विद्रोह, जिसके तार, जैसा हमने कहा, अवश्य नारी पराधीनता तथा उसकी मुक्ति की आकांक्षा से जुडते है परंतु जिज्ञासा है औरत होने के नाते मीरा ने क्या खुद कभी अपनी यातना के साथ औरत जाति कि यातना पर भी ध्यान दिया ? क्या उनके कोई पद ऐसे हैं जिनमें उन्होंने अपने नरक को औरत जाति के नरक से जोड़ा हो ? शायद ऐसे पद मीरा में नहीं है | जैसा भी है मीरा का विद्रोह बड़ा है, उसके बृहत्तर संदर्भ हैं | मीरा ने अपने समय में चली आ रही सामाजिक संरचना पर सवाल उठाए , वे मनचाहा समाज न रच सकी हों , नारी पराधीनता और पराधीनता से नारी की मुक्ति की आकांक्षा को उन्होंने उजागर किया , मुक्ति के सपने को नारी के मन में जीवित रखा , उनका इस बिन्दु पर महत्त्व निर्विवाद है |"9

मध्यकाल में जीतने भी कवि संत हुए है उनमें विद्रोह करने वाली संत कवयित्रि एक मीरा बाई ही थी | उस काल में नारियों को घर के बाहर निकालने की इजाजत नहीं थी | नारी केवल भोग की वस्तु ही

माना जाता था | और उसका काम यही था कि घर के चार दीवारों के अंदर झाड़ू पोंछा करना और बर्तन साफ करना तथा कपड़े धोना आदि घर के सारे काम नारी के हिस्से में जाते थे | सदियों से नारियों को एक दास बनाकर रखा गया था | अगर इतिहास देखें तो पता चलता है कि जैसे सती प्रथा, विधवा आदि हम देख सकते हैं कि जब किसी नारी का जौहर मर जाता था तो उसे सती होना पड़ता था अर्थात उसके पति के चीता में बैठकर उसे भी जलाया जाता था यह कैसी हमारी समाज व्यवस्था थी ? मुझे लगता है कि सती प्रथा तो ठीक है लेकिन अगर किसी पुरुष की पत्नी मर जाती है तो क्या उसके पति को पत्नी के चीता पर बैठकर जलाया जाता था क्या ? नहीं, क्यों ऐसा होता था ? दोनों भी तो जीव ही है फिर एक के लिए एक प्रकार का न्याय और दूसरे के लिए दूसरे प्रकार का न्याय यह कहाँ का न्याय है | अर्थात नारी के प्रति समाज का देखने का नजरिया ही गलत था या उसे देखने का रवैया ही गलत था | यह हुई सती प्रथा की बात अब मैं विधवा की बात करती हूँ - जब किसी नारी का पति मर जाता है तो उसे विधवा कहा जाता है अगर वही किसी पुरुष की पत्नी मर जाती है तो उसे क्या कहा जाता है ? ऐसे मेरे मन में बहुत से सवाल है लेकिन यह अन्याय उस काल के मीरा बाई ने सामने रखा वह अन्याय किसी एक मीरा का अन्याय नहीं है बल्कि उस काल के समस्त नारी के प्रति हो रहा अन्याय है जो कि मीराबाई ने सामने रखा |

पति मरने के बाद मीराबाई कृष्ण के प्रेम में मग्न हो गई थी | कहा जाता है कि -

"ऐसी लागि लगन मीरा हो गई मगन |"

के रूप में मीरा में आत्म समर्पण की भावना जितनी प्रबल है उतनी अन्यत्र दर्शित नहीं होती | मीराबाई का विवाह चित्तौड़ के राजा राणा सांगा के जेष्ठ पुत्र भोजराज से सन 1573 में हुआ | किन्तु विवाह के सात वर्ष के बाद 1580 के आसपास कुँवर भोजराज की मृत्यु हुई | जीवन के इस लौकिक आधार से वंचित होने पर उनका असीम स्नेह , अनंत प्रेम गिरिधर गोपाल के प्रति पल्लवित तथा पुष्पित हुआ | चित्तौड़ राजवंश की कुलवधू होने के कारण उन्हें मेवाड़ की राजशक्ति का घोर विरोध सहना पड़ा | किन्तु उन्होंने अनेक कष्टों को सहते हुए विष का प्याला पाशन कर कृष्ण प्रेम की भक्ति भावना को अक्षुण्ण रखा | कुछ समय पश्चात जमल और उसके पिता वीरमदेव ने मीरा को मेड़ता बुला लिया किन्तु जोधपुर नरेश मालदेव के आक्रमण के कारण वीरमदेव की स्थिति अस्थिर हो गई | इस काल में मीराबाई पुष्कर यात्रा से लौटती हुई वृंदावन चली गई |

समाज में देखते है कि किस तरह एक नारी के पति कि मृत्यु होने के बाद उस नारी को किस दृष्टिकोण से समाज देखता है | मीराबाई के साथ भी यही हुआ है | जब मीरा बाई पति मरने के बाद अपना सब कुछ अपना आराध्य देव कृष्ण को मानती है तब समाज उसका विरोध करता है | समाज ही क्यों उसका परिवार ही मतलब उसका देवर किस तरह से मीरा को सताता है | "मीरा ने साहस के

International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

साथ इस नरक का प्रतीकार किया, पाबंदियों के खिलाफ बगावत की और व्यवस्था के प्रभुओं के इरादों का पर्दाफाश किया | अपने आक्रांताओं को उन्होंने पूरे मन से धिक्कारा | उनका नाम ले -लेकर उसे सबके समाने उजागर किया | उस समाज को भी मीरा ने लानत दी जिसने उन्हें बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी | मीरा के पद साक्ष्य हैं कि कितनी कठोर यातनाओं से होकर उन्हें गुजरना पड़ा है |

हेली म्हासूं हरि बिन रह्यो न जाई |
सास लड़े मेरी, ननद खिजावै, राणा रहया रिसाई |
पहरो भी राख्यो, चौकी बिठाइयो ताला दियो जड़ाय |
पूर्वजन्म की प्रीत पुराणी, सो क्यूं छोड़ी जाय |

ढेरों पद इसी तरह के हैं जिनमें विष का प्याला भेजने, पिटारी में साँप भेजने तथा यातना के दूसरे तरीकों का जिक्र मीरा ने किया है | समझा जा सकता है कि अपने आक्रांताओं के प्रति मीरा में कितनी घृणा, कड़वाहट तथा रोष है |”10

भारतीय समाज में धर्म और संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है | धर्म और संस्कृति में स्त्री-संबंधी एक आचारसंहिता एवं इसके द्वारा संचालित और नियंत्रित नियमावली है | इसके अंतर्गत एक विशेष प्रकार की स्त्रीवादी विचारधारा निहित है | इस विचारधारा का दृष्टिकोण स्त्री के संबंध में बहुत ही रूढ़िवादी, अमानवीय एवं अतार्किक किस्म का है | इसे डॉ. गोपा जोश ने विश्वस्तरीय स्त्री असमानता की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है | उनके अनुसार “इस विश्वस्तरीय असमानता को, पुरुष प्रधान समाज में विकसित धर्मों ने सामाजिक मान्यता प्रदान की है |”11 इस प्रकार उन्होने भारतीय वैदिक पौराणिक परंपरा में स्त्री को स्थिति को जाँचने का प्रयास किया है | शुरुआत से ही विश्वस्तरीय व्यवस्था के चार महत्त्वपूर्ण सोपान रहे हैं -आदिम व्यवस्था, कृषि प्रधान व्यवस्था, सामंती/ दास प्रथा एवं पूंजीवादी व्यवस्था, जिसमें पहले मातृसत्ता कायम थी, उसके बाद पितृसत्ता का राज कायम हुआ | इसे एंगेल्स स्त्रियॉ की पहली ऐतिहासिक पराजय मानते हैं |

किन्तु मीरा कुछ जिज्ञासाएँ भी खड़ी करती हैं| कुछ सवालों को भी जन्म देती है | मीरा को संपूर्णता में जानने के लिए जिनसे मुखातिब होना जरूरी है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भारत में स्त्री असमानता - डॉ. गोपी जोशी, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिसंबर 2011 पृ. 66
2. वही - पृ. 67
3. वही - पृ. 68
4. वही - पृ. 69
5. वही - पृ. 68
6. वही पृ. 68
7. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य - शिवकुमार मिश्र - पृ.255 - लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद.
8. स्त्री-विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष डॉ. के. एम. मालती -, वाणी प्रकाशन, दरिया गंज नई दिल्ली - 2010 पृ. 162)
9. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य - शिवकुमार मिश्र - पृ.256 - लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद.
10. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य - शिवकुमार मिश्र - पृ.255 - लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद.
11. भारत में स्त्री असमानता - डॉ. गोपी जोशी, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिसंबर-2011, पृ - 61